हुसैनी जिहाद की इनफिरादियत

आयतुल्लाह अलउज़मा सैय्यद अली खामनाई मद्दजिल्लहुल आली
अनुवादक – सै0 हुसैन हैदर अकबरपुरी

एक ऐसा इन्सान, बहुत पाक मक़सद के रास्ते में जिसे दुनिया के सारे इन्साफ पसन्द लोग क़बूल करते हैं, बहुत ही सख़्त कोशिश शुरु करता है और बड़ी सख़्त मुसीबतें उठाता है। यह बड़ा अजीब जिहाद है। दोस्तों के अच्छे नारों के बीच क़त्ल हो जाना आसान है। जब हक़ और बातिल की सफें लगी हों एक तरफ हक़ की फौज हो और दूसरी तरफ बातिल की फौज, और रसूल (स0) या हज़रत अली (अ0) जैसी शख़सियत के हाथ में हक़ के महाज़ की कमान हो और वह कह रहे हों कि मैदाने जंग में जाने के लिए कौन तैयार है? सभी तैयार हो जाएँगे। मैदान में जाने वाले के लिए रसूल (स0) दुआ करते हैं उसके सर पर मुहब्बत का हाथ फेरते हैं और खुद उसे रुख़सत करते हैं। मुसलमान इसके लिए दुआ करते हैं ऐसी फ़िज़ा में मुजाहिद मैदाने जंग में जाकर जिहाद करता है और शहीद होता है। जिहाद और शहादत का यह एक अन्दाज़ है। लेकिन जिहाद का एक अन्दाज़ वह भी है कि जब इन्सान मैदाने जंग में जा रहा है तो सारा समाज या उसका मुख़ालिफ है या उससे अन्जान है। लोग उससे दूरी इख्तियार करते हैं या उसके मुक़ाबले में सफबन्दी करते हैं। यहाँ तक कि जो लोग दिल की गहराईयों से उसके बहादुरी के क़दम की तारीफ करता है उनकी तादाद इतनी कम है कि वह अपना नज़रिया ज़बान से बयान करने की भी जुर्रत नही कर पाते।

आशूर के अलमिये में हालात इतने सहमे हुए हैं यहाँ तक कि अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास और अब्दुल्लाह इब्ने जाफर जैसे लोग भी जिनका तअल्लुक़ बनी हाशिम से है और इसी शजरे तय्यबा की शाख़ हैं, इमाम हुसैन (अ0) की खुलेआम मदद नहीं कर सकते। मक्का और मदीना में आपके हक़ में खुलेआम नारे नही लगा सकते। यह बड़ा अजीब व ग़रीब जिहाद है, सबसे सख़्त जिहाद यही जिहाद है। इस मुजाहिद के सब दुश्मन हैं, सब इससे अलग हैं, यहाँ तक कि दोस्त भी इसके क़रीब आते हुए डरते हैं। जब इमाम हुसैन (अ0) एक शख़्स से मदद माँगते हैं और उसे अपने साथ आने की दावत देते हैं तो वह खुद आने के बजाए अपना घोड़ा पेश कर देता है कि इसे आप (अ0) अपने काम में लाइये। क्या मज़लूमियत और तनहाई इससे बढ़कर ख़याल की जा सकती है? क्या इससे भी ज़ियादा बेबसी का जिहाद हो सकता है? इस मज़लूमाना जिहाद में आप (अ0) की आँखों के सामने आप (अ0) के बहुत क़रीबी लोग शहीद कर दिये गए, आप (अ0) के बेटे, भतीजे, भाई बनी हाशिम के फूल आप (अ0) की निगाहों के सामने टुक्ड़े–टुक्ड़े कर दिए गये यहाँ तक कि आपका छः माह का बच्चा भी शहीद कर दिया गया।

इन सब मुसीबतों के अलावा आप (अ0) को यह भी मालूम है कि आप (अ0) के पाक जिस्म से रूह के निकलते ही आपके निहत्थे घर वालों

पर हमला किया जायेगा। यह भूखे भेड़िये उनके ख़ेमों को लूट लेंगे, उन्हें गुलाम बनाएँगे, उनकी बेइज़्ज़ती करेंगे। अमीरुलमोमिनीन अलैहिस्सलाम की बड़ी अज़मत वाली बेटी जै़नबे कुबरा सलामुल्लाहि अलैइहा (जो आलमे इस्लाम की एक अहम और बुजुर्ग शख़सियत हैं) की शान में गुस्ताखी और बेइज़्ज़ती करेंगे। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम इन सारी बातों को जानते थे और इसके बावजूद भी जिहाद और मुक़ाबला कर रहे थे। यह जिहाद कितना मुशकिल है?

इसके अलावा आप प्यासे भी थे। आपके ख़ानदान वाले प्यासे थे, नन्हे–नन्हे बच्चे प्यासे थे, बूढ़े प्यासे थे, दूध पीता बच्चा प्यासा था, साथी और दोस्त प्यासे थे, सबके सब प्यासे थे, अब ज़रा ख़्याल कीजिये कि ऐसे हालात में कोई तहरीक चलाना, कोशिश करना और जिहाद व मुक़ाबला करना कितना मुशकिल और कठिन काम है?

वह तैय्यब व ताहिर, पाक व पाकीज़गी वाला इन्सान जिसकी ज़ियारत से बरकतें हासिल करने के लिए आसमानी फरिश्ते एक–दूसरे से आगे बढ़ जाने की कोशिश करते हों। जिसके मक़ाम और दर्जों तक पहुँचने की अम्बिया व औलिया को आरज़ू हो, एक ऐसे सख़्त और मुशकिल जिहाद में बहुत बड़ी मुसीबत और परेशानियों को बर्दाश्त करके शहीद हो जाता है। कौन ऐसा इन्सान है जो इस शहादत के क़िस्से को सुने और उसके जज़्बात पर ज़ख़्म न लगे, उसके दिल को चोट न पहुँचे? कौन ऐसा इन्सान है जिसे इस हादसे की जानकारी हो और उसके दिल में इस क़िस्से से लगाव न पैदा हो। यह वह जोश मारता हुआ चश्मा है जो आशूर के दिन फूटा था। इस की शुरुआत उस वक़्त हुई जब इस रिवायत की बिना पर जनाबे ज़ैनबे कुबरा सलामुल्लाहि अलैइहा ने ''तिल्ले ज़ैनबियह'' के ऊपर जाकर नाना से कहते हुए फरमाया :–

''ऐ खुदा के रसूल (स0)! आप पर तो आसमान के फरिश्तों ने नमाज़ पढ़ी। लेकिन यह आपका नवासा हुसैन मिट्टी और धूल में सना है बिना कफ़न और बिना क़ब्र के पड़ा हुआ है। नाना इसके जिस्म के टुकड़े–टुकड़े कर दिये गए हैं। इसके जिस्म से पगड़ी और चादर भी उतार ली गई है।''

जनाबे ज़ैनब ने वहीं खड़े होकर इमाम हुसैन (अ0) की मुसीबतें बयान कीं। बीबी वह सारे क़िस्से बयान करने लगीं जिन्हें संगदिल छुपाना चाहते थे। आप (अ0) ने बुलन्द आवाज़ में उन क़िस्सों को सामने किया और हर एक जगह पर इसका एलान किया। कर्बला में बयान किया, कूफा में बयान किया, शाम में बताया, मदीने वालों को आगाह किया, यह चश्मा इसी तरह उबलता रहा और दिन बदिन इसका जोश बढ़ता रहा और आज भी यह चश्मा उबल रहा है।

यादे हुसैन और मजलिसे अज़ा नेअमत है

जब तक इन्सान को नेअमत नही मिलती, उससे उस नेअमत के बारे में सवाल भी नही किया जाता। लेकिन जब नेअमत मिल जाती है तो फिर नेअमत पाने वाले की ज़िम्मेदारियाँ भी बढ़ जाती हैं। इस नेअमत के बारे में उससे पूछ–ताछ होगी।

हमारा शीआ समाज मुहर्रम और आशूर की नेअमत से माला माल है। अफसोस है कि हमारे ग़ैर शीआ मुसलमान भाईयों ने अपने को इस नेअमत से महरूम कर रखा है। वह भी खुद को इस बड़ी नेअमत में शरीक कर सकते हैं। मगर कुछ जगहों पर ग़ैर शीआ मुसलमान भी इमाम हुसैन (अ0) का सोग मनाते हैं लेकिन यह सोग

आमतौर से उनके यहा होता नही है, हम शीओं के यहा ही चलता है।

इस यादगार और उन मजलिसों से हमें क्या फायदा उठाना चाहिए? इस नेअमत का शुक्र क्या है? यही वह चीज़ है जिसे मैं सवाल की शक्ल में आपके सामने पेश कर रहा हूँ। आप इसका जवाब दीजिये। यह अज़ीम नेअमत, दिलों को इस्लामी ईमान के जोश मारते हुए चश्में से जोड़ती है। इस नेअमत ने ऐसे अज़ीम कारनामे अन्जाम दिये हैं कि ज़ालिम और सितम करने वाले हाकिम, आशूर और इमामे हुसैन (अ0) की क़ब्र से हमेशा डरते रहे हैं। यह डर उमवी ख़लीफा के ज़माने में शुरु हुआ और आज तक बाक़ी है और आप इसका एक नमूना खुद हमारे अपने इन्क़लाब में देख चुके हैं। इन्क़लाब के दौरान जब मुहर्रम का महीना आया तो बुरे, काफिर, और झूठे रजअत पसन्द पहलवी निज़ाम ने अपने को बिना हाथ पैर वाला महसूस किया, वह समझ गए कि अब मुहर्रम आ गया है और अब लोगों को कन्ट्रोल करना मुमकिन नही है। इस मनहूस हुकूमत की रिर्पोटों में यह साफ–साफ नज़र आता है कि मुहर्रम का महीना आ जाने के बाद वह अपने होश व हवास खो बैठे थे, उनके हाथ पैर फूल गए थे और हमारे लोगों को समझने वाले, दुनिया को जानने वाले, तेज़ देखने वाले, दूर की सोंचने वाले, और समझदार व अक़लमन्द रहनुमा इमामे खुमैनी रिज़वानुल्लाह तआला अलैह अच्छी तरह जानते थे कि इस हादसे से इमाम हुसैन (अ0) के मक़सद को आगे बढ़ाने के लिए कैसे फायदा उठाया जा सकता है और उन्होंने इससे फायदा उठाया भी। आपने मुहर्रम को तलवार पर खून की कामयाबी का महीना बताया और इसी नतीजे और समझ के साथ उन्होंने मुहर्रम के महीने की बरकत से खून को तलवार पर कामयाबी दिला भी दी। यह एक नमूना है जिसे आपने खुद ही अपनी आँखों से देखा है।

इस नेअमत से फायदा उठाना चाहिए, लोगों और ओलमा दोनों को। लोगों को इस तरह फायदा उठाना चाहिए कि मजालिसे अज़ा में दिल लगाएँ, उसका शौक़ पैदा करें, मजलिसें बरपा करें, जहाँ तक हो सके ज़ियादा से ज़ियादा अलग–अलग तरह से मजलिसें करें। इन मजलिसों में सच्चाई और मुहब्बत के साथ शरीक हों शिरकत भी फायदा उठाने की नियत से हो, वक़्त गुज़ारने की नियत से नहीं या आम तरह से आख़िरत के सवाब की नियत से, जबकि उन्हें मालूम ही नहीं कि इस सवाब का सरचश्मा क्या है? यक़ीनन इन मजलिसों में शिरकत का बड़ा सवाब है लेकिन यह सवाब कैसे मिलेगा? इसका सरचश्मा क्या है? क्यों मिलेगा? इसकी वजह क्या है? यक़ीनन इस सवाब की वजह एक ख़ास सिम्त है कि अगर इसकी रिआयत न की गई तो सवाब भी नही मिलेगा, कुछ लोग इस सिम्त से अन्जान है, लोग इन मजलिसों में शरीक हों, इसकी क़द्र जानें, इससे फायेदा उठाएँ और इसे कुर्आन, इस्लमी रूह, रसूल (स0) के ख़ानदान और हुसैन इब्ने अली (अ0) से दिली और रूही तअल्लुक़ बनाने का रास्ता समझें।

ओलमा की ज़िम्मेदारियाँ लोगों से ज़ियादा बड़ी हैं क्योंकि मजलिसें इस तरह बनती हैं कि कुछ लोग एक जगह पर इकटठा होते हैं और एक आलिमे दीन मिम्बर पर जाकर मजलिस पढ़ता है। अब आप ओलमा से यह सवाल है कि आप किस तरह मजलिस पढ़ेंगे? मेरा सवाल उन सारे ओलमा से है जो इस मसले में अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास रखते हैं।